Indian Polity

Part- A (2 Marks)

मुख्य परीक्षा 2016

1. भारत में 'सम्पत्ति के अधिकार' की संवैधानिक स्थिति क्या है?

उ. भारत में 1978 से पहले अनुच्छेद-31 के तहत् सम्पत्ति का अधिकार मूल अधिकार था परन्तु 44वें संविधान संशोधन 1978 के द्वारा संविधान में अनुच्छेद-300(A) में जोड़ा गया तथा इसे विधिक अधिकार बनाया गया।

2. 'येकातेरिनबर्ग शिखर सम्मेलन' की प्रासंगिकता क्या है?

उ. 'येकातेरिनबर्ग शिखर सम्मलेन' BRIC (वर्तमान में BRICS) का प्रथम शिखर सम्मेलन था। इस सम्मेलन का मुख्य केन्द्र वैश्विक आर्थिक स्थिति में सुधार तथा ब्राजील, रूस, भारत व चीन चारों देश भविष्य में बेहत्तर सहयोग कर सकें। वर्तमान में बहुध्रुवीय विश्व बनाने में BRICS की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

3. उन चार आधारों का उल्लेख कीजिए, जिन पर भारत का राष्ट्रपति लोक सेवा आयोग के किसी सदस्य को पदच्युत कर सकता है।

उ. सदस्यों को पदच्युत करने के आधार निम्न हैं-

1. दिवालिया घोषित हो चुका हो।
2. पदावधि के दौरान अपने पद के कर्त्तव्य के बाहर किसी वेतन नियोजन में लगा हो।
3. राष्ट्रपति की नजर में मानसिक या शारीरिक रूप से अक्षम है
4. कदाचार के आधार पर।

4. राजस्थान में 'जातियों के राजनीतिकरण' की परिघटना को समझाइये।

उ. राजनीति में बढ़ते हुए जातिगत प्रभाव को ही जाति का राजनीतिकरण कहा जाता है।राजस्थान में जाट-राजपूत के मध्य सदैव संघर्ष रहा हैं। यहाँ जातिवाद अत्यन्त प्रभावी रहा है। जाटों में कहावत है- जाट की बेटी जाट को, जाट का वोट जाट को। वर्तमान में गुर्जर जाति भी राजस्थान में राजनीतिक तौर पर संगठित जाति बनकर उभरी है।

5. जी-20 की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

उ. जी-20 में 19 देशों तथा EU का समूह है, जिसकी स्थापना वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रणालीबद्ध महत्त्वपूर्ण औद्योगिक और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक साथ लाने तथा महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के लिए की गई। वर्तमान में विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में स्थिरता तथा सतत विकास के लिए प्रासंगिक है।

मुख्य परीक्षा 2018

1. उद्देश्य-प्रस्ताव में प्रत्याभूत स्वतंत्रता के क्षेत्र का उल्लेख कीजिए।

उ. उद्देश्य- प्रस्ताव में प्रत्याभूत स्वतंत्रता के क्षेत्र निम्नलिखित है- भाषण, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना, व्यवसाय, संघ बनाने और कार्य करने की स्वतंत्रता इस स्वतंत्रता को कानून और सार्वजनिक नैतिकता के अधीन रखा गया है।

2. अनुच्छेद 352 एवं अनुच्छेद 356 के मध्य सेतु के रूप में अनुच्छेद 355 की भूमिका को स्पष्ट करें।

उ. संविधान के अनुच्छेद 352 में राष्ट्रीय आपातकाल का वर्णन है, वहीं अनुच्छेद 356 में राज्यों में राष्ट्रपति शासन का प्रावधान है। हालांकि राज्य में संकट की स्थिति के समय अनुच्छेद 355 के तहत् बाह्य आक्रमण व आन्तरिक अशान्ति से राज्यों की सुरक्षा करने का कर्त्तव्य केन्द्र सौंपा गया है।

इससे स्पष्ट होता है की अनुच्छेद 352 व 356 के मध्य 355 सेतु का कार्य करता है।

3. क्या केन्द्रीय सतर्कता आयोग किसी के भी विरुद्ध प्रकरण का अन्वेषण कर सकता है?

उ. केन्द्रीय सतर्कता आयोग एक जाँच एजेंसी नहीं है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग या तो सीबीआई के माध्यम से या विभागीय मुख्य सतर्कता अधिकारियों के माध्यम से जाँच करवाता है।

यह आयोग केवल केन्द्र सरकार के विभागों/कंपनियों/संगठनों के अधिकारियों के मामले में जाँच का आदेश देता है।

4. 'ऑपरेशन ऐन्ड्यूरिंग फ्रीडम' को स्पष्ट करें।

उ. यह ऑपरेशन अमेरिकी सरकार ने आतंकवाद पर वैश्विक युद्ध के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अधिकारिक नाम था। 7 अक्टूबर, 2001 को 11 सितम्बर के हमलों के जवाब में राष्ट्रपति बुश ने घोषणा की। अलकायदा और तालिबान को लक्षित करने वाले हवाई हमले अफगानिस्तान में शुरु हो गये, यह ऑपरेशन मुख्य रूप से अफगानिस्तान से सम्बंधित है।

5. अन्ना राजम मल्होत्रा कौन थीं तथा हाल ही में वे समाचारों में क्यों थी?

उ. अन्ना राजम मल्होत्रा आजादी के बाद भारत की पहली महिला आईएएस अधिकारी। इन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री सी. राजगोपालचारी तथा केन्द्र सरकार के अन्तर्गत मद्रास राज्य में अपनी सेवाएं दी।

- इन्होंने 1951 में मद्रास कैडर से जुड़ी, इन्होंने मुम्बई में भारत के पहले कम्प्यूटरीकृत बंदरगाह न्हावा शेवा (जवाहर लाल नेहरू) के अध्यक्ष के रूप् में सफलतापूर्वक निर्माण करवाया। इनकी 17 सितम्बर 2018 को 91 वर्ष की आयु में मुम्बई में मृत्यु हो गई।

मुख्य परीक्षा 2021

1. भारत के संविधान की उद्देशिका में उल्लिखित 'बंधुता' को स्पष्ट कीजिए।

उ. भारत के संविधान की उद्देशिका में उल्लिखित बंधुता से तात्पर्य है, देश के नागरिकों के बीच भाईचारे एवं अपनेपन की भावना के विकास से है। प्रस्तावना में उल्लेखित 'बंधुता' व्यक्ति की गरिमा एवं राष्ट्रीय एकता और अखण्डता सुनिश्चित करती है। बंधुता शब्द फ्रांस की क्रांति से प्रेरित है।

2. भारत के संविधान के अनुच्छेद 103 में निर्वाचन आयोग की भूमिका क्या है?

उ. भारतीय संविधान के अनुच्छेद-103 में संसद के सदस्यों की निरर्हरता संबधी प्रश्नों पर निर्णय होता है। ऐसे किसी भी प्रश्न पर कोई निर्णय देने से पहले राष्ट्रपति, चुनाव आयोग की राय प्राप्त करेंगे और राय अनुसार कार्य करेंगे।

3. 'अब्राहम समझौते' के मुख्य बिन्दु क्या हैं?

उ. यूएई, बहरीन और इजराइल के मध्य संबंधों को सामान्य करने वाला शांति समझौता है जिसमें यूएसए ने मध्यस्थता की है। इस समझौते के तहत् यूएई, बहरीन एवं इजराइल को मान्यता देने के साथ अपने आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा संबंध बेहतर बनाएंगे। समझौते के तहत् इजराइल ने वेस्ट बैंक क्षेत्र को शामिल करने की योजना को स्थगित कर दिया।

4. 'थाड' क्या है?

उ. THAAD – टर्मिनल हाई अल्टीट्यूट डिफेंस। यह एक अमेरिकन एंटी बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम है, जिसे कम, मध्यम और मध्यवर्ती रेंज वाली बैलिस्टिक मिसाइलों को उनकी लॉचिंग स्टेज में ही नष्ट करने के लिए बनाया गया है। अमेरिका ने इस प्रणाली को दक्षिण कोरिया में तैनात किया हुआ है। इस तकनीकी से एक बार में आठ मिसाइलें दागी जा सकती है।

5. G-20 रोम शिखर सम्मेलन 2021 के चार प्रमुख मुद्दे लिखिए।

उ. G-20 रोम शिखर सम्मेलन-2021 के चार प्रमुख मुद्दे-

1. कोविड-19 महामारी
2. जलवायु परिवर्तन
3. प्रमुख कर समझौता
4. वैश्विक आर्थिक विकास और स्थिरता से संबंधित विषय।

मुख्य परीक्षा 2023

1. In the context of federal system, what are the provisions regarding Residuary mattersin the Constitution of India?
भारत के संविधान में संघीय व्यवस्था के संदर्भ में अवशिष्ट विषयों के लिए क्या प्रावधान हैं?

उत्तर- अनुच्छेद 248 कहता है कि "संघ को अवशिष्ट विषयों पर विधि बनाने का अधिकार होगा", जो विषय संविधान में किसी भी सूची (संघ सूची, राज्य सूची या समवर्ती सूची) में नहीं आते, वे अवशिष्ट विषय माने जाएंगे। संविधान की संघीय व्यवस्था के अन्तर्गत अवशिष्ट विषयों के लिए संविधान की 7वीं अनुसूची के अनुसार संसद को अवशिष्ट विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है।

2. Regarding the Bharatiya Adivasi Party's performance in the Rajasthan Vidhan Sabha elections held in 2023, answer the following questions:
2023 में आयोजित राजस्थान विधान सभा चुनाव में, भारतीय आदिवासी पार्टी (BAP) के प्रदर्शन से संबंधित निम्नांकित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

(a) Total seats contested by BAP.
(b) Total seats won by BAP.
(c) Percentageof valid votes secured by BAP.
(d) Percentage of valid yotes secured by BAP in seats contested by it.

(a) बी.ए.पी द्वारा लड़ी गई कुल सीटें
(b) बी.ए.पी द्वारा जीती गई कुल सीटें
(c) बी.ए.पी द्वारा वैध मतों का प्राप्त प्रतिशत
(d) बी.ए.पी द्वारा लड़ी गई सीटों पर वैध मतों का प्राप्त प्रतिशत

उत्तर- भारतीय आदिवासी पार्टी (BAP) द्वारा 2023 के राज्य विधान सभा चुनावों में 200 सीटों में से 27 सीटों पर चुनाव लड़ा था।

- पार्टी ने 3 सीटों पर विजय प्राप्त की।
- इसमें BAP पार्टी द्वारा प्राप्त वैध मत 2.37 प्रतिशत थे।
- बी.ए.पी द्वारा लड़ी गई सीटों पर वैध मतों का 16.68 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

3. What is 'Global Stocktake (GST)'?
'ग्लोबल स्टॉकटेक (जीएसटी)' क्या है?

उत्तर- 'ग्लोबल स्टॉकटेक (जीएसटी)' पेरिस समझौते 2015 के तहत एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो जलवायु कार्रवाई पर दुनिया की प्रगति का हर पाँच साल में व्यापक मूल्यांकन करती है,

- इसका मकसद समझौते के लक्ष्यों को हासिल करने में हुई प्रगति की जानकारी देना है। ताकि देशों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अधिक मजबूत कदम उठाने में मदद मिले।
- प्रथम वैश्विक स्टॉकटेक वर्ष 2023 में COP 28 में सम्पन्न हुआ था।

4. Why the following persons were recently in the news?
निम्नलिखित व्यक्ति हाल ही में समाचारों में क्यों थे?
(i) Idashisha Nongrang/इदाशिशा नोंगरांग
(ii) Alok Shukla/आलोक शुक्ला

उत्तर-

(i) इदाशिशा नोंगरांग- 1992 बैच की भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) की अधिकारी इदाशिशा नोंगरांग को मेघालय राज्य की पहली महिला पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) 19 मई, 2024 को नियुक्त कर इतिहास रच दिया।

(ii) आलोक गुप्ता- छत्तीसगढ़ के पर्यावरणविद् 'हंसदेव अरण्य बचाओ संघर्ष समिति' के सदस्य आलोक शुक्ला ने सामुदायिक अभियान का नेतृत्व कर छत्तीसगढ़ में 445,000 एकड़ जैव विविधता से भरपूर जंगलों को बचाया। आलोक शुक्ला को गोल्ड मैन एनवायरन्मेंटल पुरस्कार (ग्रीन नोबल पुरस्कार) 2024 दिया गया।

5. Who are the Shompen tribe? Why this tribe was recently in news?

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

शोम्पेन जनजाति कौन हैं? यह जनजाति हाल ही में समाचारों में क्यों थीं?

उत्तर- शोम्पेन जनजाति-ग्रेट निकोबार द्वीप में रहने वाले विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों में से एक शोम्पेन जनजाति के 7 सदस्यों ने पहली बार केन्द्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार लोकसभा क्षेत्र में 'शोम्पेन हट' नामक मतदान केन्द्र पर अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

मुख्य परीक्षा 2024

1. भारत के संविधान में 'मूल अधिकारों के स्वर्णिम त्रिभुज' को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-
- भारत के संविधान में 'मूल अधिकारों का स्वर्णिम त्रिभुज' अनुच्छेद 14, 19 और 21 को कहा जाता है।
- अनुच्छेद 14 समानता, अनुच्छेद 19 स्वतंत्रता और अनुच्छेद 21 जीवन व व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देता है।
- ये तीनों मिलकर लोकतंत्र की आत्मा और नागरिकों की गरिमा की रक्षा करते हैं।

2. केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त को उसके पद से हटाने की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर-
- केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त को उसके पद से हटाने की प्रक्रिया उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की तरह होती है।
- राष्ट्रपति केवल तभी हटा सकते हैं जब सर्वोच्च न्यायालय, सरकार के संदर्भ पर, यह प्रमाणित करे कि आयुक्त दोषपूर्ण आचरण या अक्षमता का दोषी है। इससे पद की स्वतंत्रता सुरक्षित रहती है।

3. मध्यवर्ती जातियों के उत्थान के संदर्भ में 'बैल पूँजीपतियों' की अवधारणा क्या है?

उत्तर-
- 'इन परस्यूट ऑफ़ लक्ष्मी' पुस्तक के अनुसार 'बैल पूँजीपति' मध्यवर्ती जातियों के उन स्वतंत्र, स्व-वित्तपोषित किसानों को कहते थे, जिनके पास अपनी ज़मीन जोतने और उत्पादन के लिए पर्याप्त बैलों की जोड़ी होती थी, जो राज्य के बजाय निजी भूमि मालिकों के रूप में कृषि पर हावी हुए।
- विशेषकर 1970-80 के दशक में ज़मींदारी उन्मूलन के बाद और जिन्होंने राजनीतिक रूप से शक्तिशाली होकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था व राजनीति को प्रभावित किया।

4. 1956 के स्वेज़ नहर संकट के समय भारत का क्या रुख़ था?

उत्तर-
1. **मिस्र के साथ एकजुटता:** भारत ने नासिर के नेतृत्व में मिस्र का समर्थन किया और नहर के राष्ट्रीयकरण को वैध माना।
2. **औपनिवेशिक विरोध:** ब्रिटेन, फ्रांस और इज़राइल की कार्रवाई को भारत ने "कायरतापूर्ण" और औपनिवेशिक मानसिकता का प्रतीक बताया।
3. **संयुक्त राष्ट्र में सक्रियता:** भारत ने अमेरिका और एशियाई-अफ्रीकी देशों के साथ मिलकर युद्धविराम प्रस्ताव पारित करवाने में अहम भूमिका निभाई।
4. **शांति सेना में योगदान:** भारत ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र शांति सेना (UNEF) में सैनिक भेजे और नेतृत्व भी किया।
5. **गुटनिरपेक्षता की मजबूती:** नेहरू ने नासिर को रक्षा समझौतों से दूर रहने और गुटनिरपेक्ष नीति अपनाने के लिए प्रेरित किया।

5. सनी सेबास्टीयन कौन हैं? वो अभी हाल में समाचारों में क्यों थे?

उत्तर-
- सनी सेबेस्टियन वरिष्ठ पत्रकार और शिक्षाविद् हैं।
- वे हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर के संस्थापक और द हिंदू अख़बार में डिप्टी एडिटर रह चुके हैं।
- मार्च 2025 में, सनी सेबास्टियन द्वारा लिखी गई पुस्तक **'माही के मनस्वी'** का विमोचन हुआ। इस किताब में हरिदेव जोशी(पूर्व मुख्यमंत्री) के जीवन और योगदान का विवरण है।

❑❑❑

Part- B
(5 Marks)

मुख्य परीक्षा 2016

1. नीति आयोग के प्रमुख कार्यों की विवेचना कीजिए।

उ. नीति आयोग को 1 जनवरी, 2015 को योजना आयोग से प्रतिस्थापित किया गया। नीति आयोग सहकारी संघवाद के लिए बॉटम अप (Bottom Up) दृष्टिकोण पर कार्य करता है।

नीति आयोग के कार्य निम्न है-
1. रणनीतिक और दीर्घकालिक नीति, कार्यक्रम ढाँचे तथा पहलों को डिजाईन करना, उनकी प्रगति तथा प्रभावी क्रियान्वयन की निगरानी करना निगरानी व प्रतिक्रिया के माध्यम से माध्यमिक पाठ्यक्रम सुधार व अभिनव सुधार करना।
2. राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय थिंक टैंको के साथ साझेदारी प्रोत्साहित करना
3. नवाचार व उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।
4. विकास ऐजेंडे के क्रियान्वयन में तेजी लाना
5. प्रतिस्पर्धी संघवादों को बढ़ावा देना।

2. किसी राजनीतिक दल को राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्रदान करने हेतु क्या मापदण्ड है?

उ. किसी राजनीतिक दल को राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्रदान करने के मापदण्ड केन्द्रीय निर्वाचन आयोग निर्धारित करता है, जो कि निम्न हैं-
1. यदि कोई पार्टी कम से कम 3 विभिन्न राज्यों को मिलाकर लोकसभा की 2% सीटें जीत जाती है या
2. यदि कोई पार्टी 4 लोकसभा सीटों के अलावा लोकसभा या विधानसभा में 6% वोट प्राप्त करती है या
3. यदि कोई पार्टी चार या चार से अधिक राज्यों में क्षेत्रीय पार्टी के रूप में मान्यता रखती है।

3. वर्तमान में सार्क (SAARC) के समक्ष क्या चुनौतियाँ है?

उ. दक्षिण एशियाई क्षेत्र के लोगों के कल्याण व जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए 08 दिसम्बर, 1985 को सार्क की स्थापना की गई थी।

- वर्तमान में सार्क (SAARC) के समक्ष चुनौतियाँ-
  1. बैठकों का कम आयोजन-सार्क की 2 वर्ष में एक बैठक आयोजित होती है।
  2. सहयोग का व्यापक क्षेत्र का शामिल नहीं होना- उदा. ऊर्जा व संसाधन शामिल नहीं है।
  3. SAFTA की सीमा- SAFTA समझौते को सही तरीके से लागू नहीं किया गया है। इसमें केवल वस्तुओं का व्यापार किया जा रहा है। सेवा व तकनीकी शामिल नहीं है।
  4. भारत-पाक के सम्बंधों में तनाव।

4. दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियों के प्रति भारत की प्रतिक्रिया की विवेचना कीजिए।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

उ. दक्षिण चीन सागर में भारत, चीन की गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए बहुआयामी कदम उठा रहा है। महान भारतीय विचारक चाणक्य ने कहा है- दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। इसको आधार बनाकर भारत, वियतनाम के साथ अच्छे सम्बंध बना रहा है। वही भारत क्वाड(QUAD) के माध्यम से जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ मजबूत सम्बन्ध बना रहा है। इसके अतिरिक्त भारत पूर्व की ओर देखो नीति की जगह एक्ट ईस्ट नीति पर बल दे रहा है। भारत इन देशों में ऊर्जा खोज क्षेत्र में भी प्रभावी भूमिका निभा रहा है।

5. पुंछी आयोग की प्रमुख सिफारिशों को इंगित कीजिए।

उ. केन्द्र-राज्य सम्बन्धों से सम्बन्धित मुद्दों पर विचार हेतु भारत सरकार द्वारा मदन मोहन पुंछी की अध्यक्षता में पुंछी आयोग (2007) का गठन किया गया।

पुंछी आयोग की प्रमुख सिफारिशें-

1. राज्यपाल की नियुक्ति पर सरकारिया आयोग की सिफारिशों का पालन होना चाहिए (राज्य का बाहरी व्यक्ति/गैर राजनीतिक पृष्टभूमि)। राज्यपाल पर महाभियोग लागू होना चाहिए।
2. विधान सभा विधेयक पर छ:माह में राज्यपाल की सहमति/राष्ट्रपति के विचारार्थ भेजना।
3. त्रिशंकु विधानसभा के लिए स्पष्ट दिशा निर्देश चुनाव से पूर्व सबसे बड़े दल को आमंत्रण
4. राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद-356) को लेकर दिशा निर्देश लागू करने की सिफारिश की गई।

मुख्य परीक्षा 2018

1. भारत के संविधान के अनुच्छेद- 21 में उपबन्धित प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार के निहितार्थों को स्पष्ट करें।

उ. संविधान के अनुच्छेद- 21 के अनुसार किसी भी व्यक्ति को "विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के बिना प्राण व दैहिक स्वतत्रंता से वंचित नहीं किया जा सकता।"

- ए. के. गोपालनवाद में न्यायपालिका ने अनुच्छेद 21 की संकीर्ण व्याख्या की जिसके अनुसार न्यायपालिका को विधायिका द्वारा पारित कानून का अक्षरक्ष: पालन करना होता है चाहे वह कानून प्राकृतिक न्यान के विरुद्ध हो तथा स्पष्ट किया कि जीवन के अधिकार का हर केवल जीवित रहने से है।
- मेनका गाँधी वाद 1978 में सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 की व्यापक व्याख्या की जिसके अंतर्गत 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' को 'विधि की सम्यक प्रक्रिया' से प्रतिस्थापित कर दिया तथा स्पष्ट किया कि विधायिका द्वारा पारित कानून यदि अतार्किक, अनुचित तथा प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध है तो न्यायपालिका उसकी समीक्षा कर सकती है तथा स्पष्ट किया कि जीवन का आशय – मानवीय गरिमा से युक्त मूल्यवान जीवन से है।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इस अधिकार को मौलिक अधिकारों का हृदय कहा है।

2. राष्ट्रपति की निर्वाचकी-प्रक्रिया में कमियों का वर्णन कीजिए।

उ. भारत में राष्ट्रपति के निर्वाचन हेतु एकलसंक्रमणीय अनुपातिक प्रणाली को अपनाया गया हैं जिसमें सभी निर्वाचित सांसद एवं विधानमण्डलों के निर्वाचित सदस्य भाग लेते है। राष्ट्रपति की निर्वाचकीय प्रक्रिया में निम्न कमियाँ हैं –

1. राज्यसभा व लोकसभा में मनोनीत सांसदों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।
2. राज्यों के मनोनीत विधायक इस प्रक्रिया में शामिल नहीं है।
3. इस प्रक्रिया में सभी सदस्यों को वरीयता अनुक्रम में मतदान करते है यदि एक सदस्य वरियता क्रम से छूट जाता है तो मत पत्र खारीज हो जाता है।
4. छोटे राज्यों के विधायकों का मत मूल्य कम तथा बड़े राज्यों के विधायकों का मत मूल्य अधिक है।
5. चुनाव प्रणाली की जटिलता।

- इन सभी कमियों के बावजूद आज भी देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति का चुनाव राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है।

3. राजस्थान की राजनीतिक जनांकिकी का वर्णन कीजिए।

उ. राजनीतिक जनांकिकी- राजनीति व जनसंख्या परिवर्तन के बीच संबंधों का अध्ययन है। जनसंख्या में परिवर्तन विभिन्न कारणों से होता है जैसे- जन्म, मृत्यु, आयु, संरचना, प्रवासन।

- सामाजिक परिवर्तन के कारण राजनीतिक जनांकिकी में परिवर्तन आता है। राजस्थान में 72 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या है और 54 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती हैं, जिससे राजनीति में कृषि मामलों का ज्यादा प्रभाव दिखाई देता है।
- विश्व जनसंख्या कोश के अनुसार राजस्थान में युवाओं की संख्या में वृद्धि देखने को मिली है इससे राजस्थान की राजनीति के निर्धारण में युवाओं की भूमिका बड़ी है देश के अन्य हिस्सों से राजस्थान में प्रवासन के कारण शहरों में जनसंख्या का दबाव बढ़ा है।

4. जलवायु-परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय पहलों पर भारत के रूख का विवेचन कीजिए।

उ. जलवायु परिवर्तन की दिशा में भारत ने अपनी INDC की घोषणा दिसंबर 2016 में की थी, इसके लिए उसने पेरिस घोषणा पत्र के अनुसार GHg गैस का उत्पादन 33% तक कम करने, सौर ऊर्जा को 100 GW तक बढ़ाना 50 MG से कम की जल परियोजना को ग्रीन प्रोजेक्ट में शामिल करना है।

- आज भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन की स्थापना करना, सौर पैनल खरीद पर सब्सिडी देना, ऊर्जा के वैकल्पिक संसाधनों की खोज व उनका उपयोग, सीएनजी पर जोर, BS-VI को लागू करना, CAMPA की स्थापना, ग्रीन इंडिया के तहत् लोगों को जागरूक करना भी एक अच्छा कदम है।
- कोप-26 में प्रधानमंत्री मोदी ने पंचामृत रणनीति की घोषणा की है, जिसमें भारत 2030 तक अपनी गैर जीवाश्म ऊर्जा क्षमता 500 गीगावाट प्राप्त कर लेगा।

5. दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत-चीन संबन्धों के संयुक्त राज्य अमेरीका के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उ. दक्षिण-पूर्व एशिया में भारत-चीन सम्बन्धों में संयुक्त राज्य अमेरिका का दृष्टिकोण निम्नलिखित है –

- चीन जैसी महाशक्ति को प्रतिसन्तुलित करने के लिए अमरिका भारत के सहयोग की अपेक्षा करता है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में नौवहन, समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक दृष्टि से अमेरिका की अहम भूमिका है।
- चीन से मुकाबला करने के लिए भारत व अमेरिका ने मिलकर QUAD नामक लोकतान्त्रिक देशों का समूह बनाया है, इसके साथ कोरिया + नीति, पाईवोट एशिया नीति एवं IORA के माध्यम से अमेरिका अपनी भूमिका बढ़ा रहा है।

- वर्तमान में भारत व अमेरिका दोनों के सम्बन्ध ताईवान से अच्छे हो रहे है। इस प्रकार दक्षिण पूर्व की एशिया में भारत व अमेरिका मिलकर चीन को प्रतिसंतुलित करने में सफल हो रहे है।

मुख्य परीक्षा 2021

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

1. 'आजाद हिंदुस्तान का पहला मंत्रिमण्डल राजनीतिक चरित्र का नहीं बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का था।' केवल तथ्यों के साथ कथन का समर्थन या विरोध कीजिए।

उ. आजाद हिंदुस्तान का पहला मंत्रिमण्डल राजनीतिक चरित्र का नहीं बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का था क्योंकि इस मंत्रिमण्डल में भारत के सभी राज्यों से मंत्री शामिल थे। जैसे-जवाहर लाल नेहरू (उत्तरप्रदेश) प्रधानमंत्री बने, सरदार वल्लभ भाई पटेल (गुजरात) गृहमंत्री व उपप्रधानमंत्री, सी. राजगोपालाचारी (मद्रास) गृहमंत्री, आर के षणमुखम शेट्टी (मद्रास) वित्त मंत्री, बी.आर. अम्बेडकर (बंबई) विधि एवं कानून मंत्री, जॉन मथाई (केरल) रेलमंत्री, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (बिहार) कृषि एवं खाद्य मंत्री, अब्दुल कलाम आजाद (बंगाल) शिक्षामंत्री बने।

- साथ ही इसमें सभी वर्गों यथा-अनुसूचित जाति, जनजाति, रियासतों, अल्पसंख्यकों का भी स्पष्ट प्रतिनिधित्व विद्यमान था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पहला कैबिनेट राष्ट्रीय प्रकृति का था।

2. मुख्य न्यायमूर्ति रामन्ना ने कहा है कि न्यायिक समीक्षा को न्यायिक अतिरेक के रूप में प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। उनके इस कथन का क्या अर्थ है?

उ. मुख्य न्यायमूर्ति रामन्ना के कथन का तात्पर्य यह है कि न्यायिक समीक्षा को न्यायिक अतिरेक की तरह उपयोग करना ठीक नहीं है क्योंकि यह कार्यपालिका व न्यायपालिका की शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत का उल्लंघन करता है तथा सरकार के कार्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

- यह सरकार के कार्यों को सीमित करता है, मौजूदा कानूनों को पालन करने से रोकता है तथा न्यायपालिका की साख पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अदालत के हस्तक्षेप से सरकार की अखण्डता, गुणवत्ता एवं दक्षता में लोगों का विश्वास कम होता है।

3. भारत के राष्ट्रपति को पद से हटाने के संविधानिक प्रावधान को स्पष्ट करें।

उ. भारत के राष्ट्रपति को पद से अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया के माध्यम से हटाया जा सकता है।

- आधार : संविधान का अतिक्रमण।
- महाभियोग की प्रक्रिया : यह प्रक्रिया संसद के किसी भी सदन में प्रारंभ किया जा सकता है। महाभियोग के लिए राष्ट्रपति पर आरोपों को सदन के ¼ सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित किया जाना चाहिए, राष्ट्रपति को पद से हटाने के लिए 14 दिन पूर्व सूचना देना अनिवार्य है। यह प्रस्ताव दोनों सदनों में 2/3 बहुमत से पारित होना चाहिए। राष्ट्रपति उस तारीख से हट जाएगा जिस तारीख को दोनों सदनों में प्रस्ताव पारित किया जाता है।

4. 'एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड' की अवधारणा को स्पष्ट करें।

उ. यह अवधारणा कोप-26 ग्लासगो में भारत के पीएम नरेंद्र मोदी तथा यूके के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन द्वारा जारी किया।

- एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड से पूरे विश्व में इंटरकनेक्टेड ग्रीन ग्रिड विकसित करना, जिससे सभी राष्ट्र खतरनाक जलवायु परिवर्तन को रोकने तथा पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूरा कर सके।
- इसका उद्देश्य है कि विश्वव्यापी ग्रिड विकसित करने में सहायता करना जिससे स्वच्छ ऊर्जा कहीं भी प्रेषित की जा सके। दुनिया के एक हिस्से में रात में बिजली का उपयोग दुनिया के दूसरी तरफ उत्पन्न सौर ऊर्जा से जहां यह दिन का समय होता है।

5. स्वतंत्रता पश्चात्, राजस्थान में प्रथम विधानसभा चुनाव की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ. मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास (मनोनीत) के नेतृत्व में जनवरी, 1952 में राज्य में पहला विधानसभा चुनाव हुआ। कुल 160 सीट में से 139 सामान्य, 16 एससी, 3 एसटी के लिए आरक्षित सीटें थीं। प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस के 7 प्रत्याशी विधानसभा हेतु निर्विरोध चुने गए।

- कांग्रेस-82, राम राज्य परिषद -24, भारतीय जनसंघ-8, कृषिकार लोक पार्टी-7, हिन्दू महासभा-2, कृषक मजदूर प्रजा पार्टी को 1 तथा निर्दलीयों को 35 सीटें प्राप्त हुई। 23 फरवरी, 1952 प्रथम विधानसभा का गठन हुआ। प्रथम बैठक 29 मार्च, 1952 को जयपुर के सवाई मानसिंह टाउन हॉल में हुई। प्रथम विधानसभा अध्यक्ष-नरोत्तम लाल जोशी तथा उपाध्यक्ष-लाल सिंह शक्तावत चुने गए। महारावत संग्राम सिंह राजस्थान के प्रथम प्रोटेम स्पीकर बने। प्रथम विधानसभा काल में 17 क्षेत्रों से उपचुनाव हुए।
- इस प्रकार प्रथम विधानसभा में कांग्रेस का वर्चस्व अर्थात् एकदलीय व्यवस्था, महिलाओं का प्रतिनिधित्व ना के बराबर था।

मुख्य परीक्षा 2023

1. Explain the principle of 'Reasonable Classification' impliedin Article 14 of the Constitution of India.
भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित 'युक्तियुक्त वर्गीकरण' के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-'युक्तियुक्त वर्गीकरण' का सिद्धांत संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित है और यह राज्य को वर्गों में विभाजन करने की अनुमति देता है, बशर्ते यह विभाजन न्यायसंगत, उद्देश्यपूर्ण और संविधानिक उद्देश्यों के अनुरूप हो। यह सिद्धांत सामाजिक और आर्थिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है, ताकि विशेष वर्गों को विशेष संरक्षण और अवसर मिल सके।

- भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 में समानता का अधिकार सुनिश्चित किया गया है, जिसके अनुसार "कानून के समक्ष समानता" का सिद्धांत लागू होता है। हालांकि, यह सिद्धांत युक्तियुक्त वर्गीकरण को स्वीकार करता है। इसका मतलब है कि राज्य किसी विशेष वर्ग, समूह या व्यक्ति के बीच भेदभाव कर सकता है, बशर्ते कि ऐसा वर्गीकरण समान और युक्तियुक्त कारण पर आधारित हो। वर्गीकरण के लिए दो शर्तें आवश्यक हैं : वर्गीकरण तार्किक और न्यायसंगत होना चाहिए यह वर्गीकरण समान परिस्थितियों वाले व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करता है।

2. In the context of people's movements, discuss the 'Non-Party Political Process' in India.
जन-आंदोलनों के संदर्भ में, भारत में 'गैर-दलीय राजनीतिक प्रक्रिया' का विवेचन कीजिए।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

उत्तर-भारत में **गैर-दलीय राजनीतिक प्रक्रिया** ने लोकतंत्र को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें जनसाधारण की आवाज़ अधिक महत्वपूर्ण होती है।

- यह दर्शाता है कि राजनीतिक दलों से परे भी समाज में गहरे बदलाव लाने की क्षमता होती है।
- हालाँकि, ऐसे आंदोलनों को समय-समय पर ठोस राजनीतिक और वैधानिक परिणाम प्राप्त करने के लिए एक स्थिर और समर्पित नेतृत्व की आवश्यकता होती है।
- इस प्रकार के आन्दोलन किसी विशेष राजनीतिक दल या पार्टी से जुड़े बिना नागरिकों द्वारा चलाए जाते हैं। इनमें जनता का सक्रिय सहयोग होता है और ये आमतौर पर लोकतांत्रिक मूल्यों और संस्थाओं की रक्षा करने के लिए होते हैं।
- इनका मकसद सत्ता या व्यवस्था में सुधार या बदलाव (राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, पर्यावरणीय या सांस्कृतिक लक्ष्यों) करना होता है। उदाहरण स्वरूप, 'भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन' और 'अन्ना हजारे का आंदोलन' जैसे संघर्ष गैर-दलीय राजनीतिक प्रक्रिया के उदाहरण हैं।
- इन आंदोलनों ने भारतीय राजनीति में एक नए जन जागरण और बदलाव की दिशा प्रदान की।

3. Mention the major 'subjects' given to urban local governance institutions under Article 243-W of the Constitution of India.
भारत के संविधान के अनुच्छेद 243-डब्ल्यू के अंतर्गत नगरीय स्थानीय शासकीय संस्थाओं को प्रदान किए गए मुख्य 'विषयों'का उल्लेख कीजिए।.

उत्तर- भारत के संविधान के अनुच्छेद 243-W के अंतर्गत नगरीय स्थानीय शासकीय संस्थाओं को कुछ विशेष विषयों (subjects) पर अधिकार और कर्तव्यों का निर्धारण किया गया है, जो उनके कार्यक्षेत्र में आते हैं।

- अनुच्छेद 243-W के अनुसार, राज्य सरकारों को नगरीय स्थानीय शासकीय संस्थाओं के लिए सिंहावलोकन विधियों के तहत कार्यान्वयन के लिए अधिकार प्रदान किए गए हैं। इस अनुच्छेद के तहत, नगरीय स्थानीय निकायों को अपने क्षेत्र में कुछ प्रमुख कार्यों के लिए संविधान द्वारा विशिष्ट अधिकार दिए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं:
  1. विकासात्मक कार्यों का नियोजन और कार्यान्वयन:
  2. स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा से संबंधित कार्य:
  3. आर्थिक और व्यापारिक कार्य:
  4. आवास और भूमि उपयोग संबंधी नीतियाँ:
  5. सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:
  6. वित्तीय प्रबंधन और करों का निर्धारण:
  7. सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाएँ:
  8. अपराध और न्याय से संबंधित कार्य:
- यह संस्थाएँ स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने में स्वतंत्र होती हैं और नागरिकों की कल्याणकारी योजनाओं के लिए जिम्मेदार होती है।

4. On what grounds the registration of Overseas Citizens of India (OCI) can be cancelled under the Citizenship Amendment Act, 2019? Against cancellation of citizenship, what rights do these citizes have?
नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019 के अंतर्गत विदेश में रह रहे भारतीय नागरिकों का पंजीकरण किन आधारों पर रद्द किया जा सकता है? नागरिकता रद्द होने के विरुद्ध, इन नागरिकों को क्या अधिकार प्राप्त हैं?

उत्तर- नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019-(CAA) के तहत, विदेश में रह रहे भारतीय नागरिकों (Overseas Citizens folndia-OCI) का पंजीकरण निम्नलिखित आधारों पर रद्द किया जा सकता है :

- यदि ऐसा करना भारत की संप्रभुता और सुरक्षा के हित में आवश्यक हो या
- अगर किसी नागरिक ने भारतीय संविधान का उल्लंघन किया हो या
- यदि वह नागरिक भारतीय विदेशी नीति के खिलाफ कार्य करता हो या
- यदि उस नागरिक का पंजीकरण धोखाधड़ी या झूठे विवरण के आधार पर हुआ हो या
- यदि पंजीकरण कराने की तिथि से पाँच वर्ष की अवधि के भीतर OCI कार्डधारक को दो साल या उससे अधिक समय के लिए कारावास की सजा सुनाई गई हो
- नागरिकता रद्द होने के विरुद्ध, उन नागरिकों को "समीक्षा अधिकार" प्राप्त होता है, जिसका मतलब है कि वे केन्द्रीय गृह मंत्रालय से अपनी स्थिति की पुनः समीक्षा की अपील कर सकते हैं। इसके अलावा, वे अदालत में भी अपील कर सकते हैं।

5. Write a note on India's performance at 77th Cannes film festival.
77वें कान फिल्म फेस्टिवल में भारत के प्रदर्शन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- 77वें कान फिल्म फेस्टिवल (2024) में भारत ने एक नया मील का पत्थर स्थापित किया। इस साल भारतीय सिनेमा ने अपनी उपस्थिति को वैश्विक मंच पर एक नई दिशा दी, और यह केवल फिल्म उद्योग के लिए नहीं, बल्कि देश की सांस्कृतिक धरोहर और रचनात्मकता के लिए भी गर्व का क्षण था। कान फिल्म फेस्टिवल में भारत की विविधता, संस्कृति, और सिनेमा की विशिष्टता को व्यापक रूप से सम्मानित किया गया।

- एक भारतीय फिल्म, पायल कपाड़िया की 'ऑल वी इमेजिन ऐज लाइट' को महोत्सव में सर्वोच्च पुरस्कार, पाल्मे डी ओर (ग्रांडप्रिक्स श्रेणी में दूसरा स्थान) के लिए नामांकित किया गया था। पायल कपाड़िया यह पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय बन गई है।
- चिदानंद एस नाइक लघु फिल्म 'सनफ्लॉवर्स ओर द फर्स्टवन्स टू नो' के लिए ला सिनेफ सेक्शन में पहला पुरस्कार जीता।
- मानसी माहेश्वरी (भारतीय) की एक एनिमेटेड फिल्म 'बनीहुड' ने ला सिनेफ चयन में तीसरा पुरस्कार जीता।
- भारत में रिलीज होने के 48 साल बाद, बेनेगल की 'मंथन' को कान्स में क्लासिक सेक्शन में प्रदर्शित किया गया।
- सिनेमैटोग्राफर संतोष सिवन अपने 'करियर और कार्य की असाधारण गुणवत्ता' के लिए 2024 कान्स फिल्म फेस्टिवल में प्रतिष्ठित पियरे एंजनीक्स ट्रिव्यूट पुरस्कार से सम्मानित होने वाले पहले एशियाई बन गए।
- अनसूया सेन गुप्ता 'द शेमलेस' में 'अन सर्टन रिगार्ड' श्रेणी में अपने प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय बनीं।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

मुख्य परीक्षा 2024

1. 'हम, भारत के लोग' होने के संविधान सभा के दावे की समीक्षा कीजिए।

उत्तर-

- हम, भारत के लोग संविधान की प्रस्तावना का मूल आधार है, जो जनसत्ता और लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करता है।
- यह वाक्य स्पष्ट करता है कि संप्रभुता का स्रोत जनता है, न कि कोई राजा या शासक वर्ग।
- संविधान सभा ने इसे अपनाकर स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक पहचान को रेखांकित किया।
- संविधान सभा का दावा यह था कि संविधान जनता की इच्छा का दस्तावेज़ है।
- आलोचक मानते हैं कि संविधान सभा सीमित प्रतिनिधित्व वाली थी, परंतु इसके बावजूद विविधता और व्यापक विचार-विमर्श से बनी। इस वाक्यांश ने नागरिकों को अधिकारों और कर्तव्यों का बोध कराया तथा लोकतांत्रिक चेतना को स्थायी आधार दिया।

2. भारत के संविधान के मुख्य प्रावधानों का उल्लेख कीजिए, जो संसद की राज्य-क्षेत्रीय अधिकारिता को परिसीमित करते हैं।

उत्तर-

- भारत के संविधान में संसद की राज्य-क्षेत्रीय अधिकारिता को सीमित करने वाले प्रमुख प्रावधान संघीय ढांचे की रक्षा करते हैं।

मुख्य प्रावधान-

- **अनुच्छेद 245:** संसद पूरे भारत के लिए कानून बना सकती है, पर राज्य विधानमंडल केवल अपने राज्य के क्षेत्र के लिए कानून बना सकता है।
- **अनुच्छेद 246:** विधायी विषयों का विभाजन तीन सूचियों–संघ, राज्य और समवर्ती में किया गया है। राज्य सूची के विषयों पर सामान्यतः केवल राज्य विधानमंडल कानून बना सकता है।
- **अनुच्छेद 249–250:** संसद केवल राष्ट्रीय हित या आपातकाल की स्थिति में राज्य सूची के विषयों पर कानून बना सकती है।
- **अनुच्छेद 252:** यदि दो या अधिक राज्य संसद से अनुरोध करें, तभी संसद उनके लिए राज्य सूची के विषयों पर कानून बना सकती है।
- **अनुच्छेद 254**: समवर्ती सूची में यदि संसद और राज्य दोनों कानून बनाते हैं, तो संसद का कानून प्रधान होगा।

निष्कर्ष

- इन प्रावधानों से स्पष्ट है कि संसद की विधायी शक्ति सीमित है और राज्यों की स्वायत्तता संरक्षित रहती है, जिससे संघीय संतुलन कायम रहता है।

3. भारत में 'स्वायत्त महिला आंदोलन' की विशेषताओं का विवेचन कीजिए। ऐसे आंदोलनों के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर-

- भारत में 'स्वायत्त महिला आंदोलन' की विशेषता यह है कि यह किसी राजनीतिक दल या सरकारी संरचना से स्वतंत्र रहकर महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के लिए संघर्ष करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- **स्वतंत्रता:** ये आंदोलन किसी पार्टी, राज्य या संस्थागत ढांचे से बंधे नहीं होते।
- **स्त्री-केंद्रित दृष्टिकोण:** महिलाओं के अनुभवों, समस्याओं और अधिकारों को केंद्र में रखते हैं।
- **विविध मुद्दे:** घरेलू हिंसा, दहेज, यौन उत्पीड़न, कार्यस्थल पर भेदभाव, प्रजनन अधिकार और समान वेतन जैसे विषयों पर ध्यान।
- **जनसहभागिता:** स्थानीय स्तर पर महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और सामूहिक नेतृत्व।
- **सांस्कृतिक चुनौती:** पितृसत्तात्मक मान्यताओं और सामाजिक ढांचों को चुनौती देना।

उदाहरण

- **महिला संघर्ष समिति (1970):** दहेज और घरेलू हिंसा के खिलाफ।
- **सेल्फ-एम्प्लॉयड वीमेन एसोसिएशन (SEWA):** असंगठित क्षेत्र की महिलाओं के अधिकारों हेतु।
- **1980–90 के दशक के आंदोलन:** बलात्कार विरोधी अभियान, शाहबानो केस पर मुस्लिम महिलाओं का आंदोलन।
- इन आंदोलनों ने भारत में महिला अधिकारों की चेतना और नारीवादी विमर्श को गहराई दी।

4. बहुपक्षीय संस्थाओं से संयुक्त राज्य अमेरिका के पीछे हटने की राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की धमकी से अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर-

- संयुक्त राज्य अमेरिका के बहुपक्षीय ढांचे से पीछे हटने की राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की धमकी से अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ सकते हैं। इससे वैश्विक सहयोग कमजोर होगा, शक्ति-संतुलन बदल सकता है और प्रतिद्वंद्वी देशों को अधिक अवसर मिल सकते हैं।

प्रभाव-

- **वैश्विक सहयोग का संरक्षण:** अमेरिका संयुक्त राष्ट्र और अन्य ढांचे का संस्थापक सदस्य रहा है। यदि वह पीछे हटता है तो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, WHO, UNESCO जैसी निर्णायक संस्थाओ के वित्त पोषण व उनकी निर्णायक भूमिका पर नकारात्मक प्रभाव होगा।
- **शक्ति शून्य (पावर वैक्यूम):** अमेरिका की अनुपस्थिति से चीन और रूस जैसे प्रतिद्वंद्वी देशों को अधिक प्रभावी होने का अवसर मिलेगा।
- **शांति प्रयासों पर प्रभाव:** शांति स्थापना पहल, मानवीय सहायता और संघर्ष समाधान में अमेरिका की वित्तीय व राजनीतिक भूमिका अहम रही है। पीछे हटने से इन पहल की क्षमता कम हो सकती है।
- **वैश्विक असुरक्षा:** बहुपक्षीय ढांचे का उद्देश्य सामूहिक सुरक्षा है। अमेरिका की दूरी से क्षेत्रीय संघर्षों और मानवाधिकार उल्लंघनों पर निगरानी कमजोर होगी।
- **अलगाववाद का खतरा:** ट्रंप की "अमेरिका फर्स्ट" नीति से अंतरराष्ट्रीय सहयोग की जगह राष्ट्रीय हित प्राथमिक हो जाते हैं, जिससे वैश्विक स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5. एआई कोश क्या है? इसके सात प्रमुख स्तंभों के नाम लिखिए।

उत्तर-

- एआई कोश भारत सरकार का एक राष्ट्रीय संरेखण डेटा प्लेटफ़ॉर्म है, जिसे मार्च 2025 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने लॉन्च किया।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- इसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के विकास के लिए उच्च गुणवत्ता वाले डेटासेट, मॉडल आदि से संबंधित मामलों का साझा भंडार उपलब्ध कराना है।
- यह भारत की IndiaAI मिशन का हिस्सा है और संरेखण को लोकतांत्रिक, सुरक्षित और नैतिक रूप से विनियमित करने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

एआई कोश के सात प्रमुख स्तंभ-

- **इंडियाएआई कंप्यूट** – उच्च क्षमता वाले संरेखण निकायों का निर्माण।
- **इंडियाएआई डेटासेट प्लेटफ़ॉर्म** – मानकीकृत और विश्वसनीय डेटा का साझा भंडार।
- **इंडियाएआई रिसर्च एंड इनोवेशन** – रिसर्च और नवाचार को बढ़ावा देना।
- **इंडियाएआई स्टार्टअप्स फाइनेंसिंग** – संरेखण संस्कृतियों को वित्तीय सहयोग।
- **इंडियाएआई फ्यूचरस्किल्स** – संरेखण शिक्षा और कौशल विकास।
- **सुरक्षित और विश्वसनीय एआई** – वैश्विक साझेदारी और सहयोग।
- **इंडियाएआई इनोवेशन सेंटर–** सुरक्षित, नैतिक और जिम्मेदार आवास उपयोग के लिए नीतिगत ढांचा।

❑❑❑

Part- C
(10 Marks)

मुख्य परीक्षा 2016

1. जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेशन के पेरिस समझौते (सो.ओ.पी. 21) की प्रमुख विशेषताएँ क्या है?

उ. जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेशन के पेरिस समझौते (COP - 21) की प्रमुख विशेषताएँ-

1. पेरिस समझौते में विकासशील और विकसित दोनों देशों को अपने ग्रीनहाउस उत्सर्जन को कम करना।
2. वैश्विक तापमान को पूर्व औद्योगिक स्तर से 2°C से अधिक बढ़ने से रोकना।
3. सभी मानव जनित ग्रीनहाउस गैसों को कम करने पर केन्द्रित।
4. लक्ष्यों को 2025 व 2030 के बीच हासिल करना।
5. जलवायु प्रत्यावर्तन के निर्माण के लिए कम लागत वाले वित्त पोषण को सुनिश्चित करना।
6. CO_2 में 20% की कमी, नवीकरणीय ऊर्जा बाजार हिस्सेदारी में 20% की वृद्धि और ऊर्जा दक्षता में 20% की वृद्धि की बात की गई है।
7. यह समझौता 196 दलों द्वारा स्वीकार किया गया है।
8. यह समझौता खाद्य उत्पादन पर किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास करता है।
9. विकासशील देशों के अनुकूलन के लिए निरंतर और संवर्धित अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्रदान करना।
10. उत्सर्जन को कम करने के लिए इस समझौते में देश वार लक्ष्य तय किये गये है।
11. विकसित देशों में विकासशील देशों को समर्थन देने के लिए 2025 तक हर साल लगभग 100 बिलियन अमरिकी डॉलर जुटाने का संकल्प लिया।

2. लैंगिक न्याय से सम्बन्धित 1997 में उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उ. लैंगिक न्याय से सम्बन्धित 1997 में उच्चतम न्यायालय ने कामकाजी महिलाओं को यौन अपराध, उत्पीड़न और प्रताड़ना से बचाने के लिए विशाखा दिशा निर्देशों को उपलब्ध करवाया था और इस फैसले में कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की बुनियादी परिभाषाएं दी कोर्ट ने जो दिशा निर्देश तय किए उन्हें विशाखा दिशा निर्देश के तौर पर जाना जाता है।

➢ **विशाखा दिशा निर्देश का महत्त्व-**

1. यह कानून यौन उत्पीड़न के विभिन्न प्रकारों को चिह्नित करता है और यह बताता है कि कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की स्थिति में शिकायत किस प्रकार की जा सकती है।
2. यह कानून कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न को अवैध करार देता है।
3. यह कानून हर उस महिला के लिए बना है जिसका किसी भी कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न हुआ हो।
4. इस कानून में उत्पीड़न में यौन उत्पीड़न की विभिन्न श्रेणियाँ बताई गई है।
5. इस कानून में नियोक्ताओं के कर्त्तव्य बताये गये हैं।
6. आंतरिक शिकायत समिति का गठन करना

3. 1998 से राजस्थान की राजनीति में स्थिर हो रही 'द्विदलीय प्रणाली' को परिघटना की विवेचना कीजिए-

उ. राजस्थान की राजनीति में मुख्य रूप से दो दलों की सरकार रही है- भारतीय जनता पार्टी तथा कांग्रेस पार्टी।

- 1998 के चुनावों में प्याज कीमतों में वृद्धि के मुद्दे पर भाजपा चुनाव हार गई तथा कांग्रेस के अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बन गए परन्तु 1999 में राजस्थान लोकसभा के चुनाव हार गए।
- 2002 में भैरोंसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति बने इसलिए उन्होंने राजस्थान राजनीति तथा भाजपा को छोड़ दिया तथा अपना उत्तराधिकारी वसुंधरा राजे सिंधिया को नियुक्त किया।
- राजे ने 2003 में चुनावों में भाजपा को जीत दिलाई तथा 2003-2008 तक राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी।
- 2004 में बीजेपी ने लोकसभा चुनाव यही से जीता था। 2008 में गुर्जर आरक्षण आंदोलन की वजह से भाजपा हार गई। कांग्रेस ने सरकार बनाई।
- 2013 में मोदी लहर की वजह से पुन: भाजपा जीत गई राजे दुसरी बार CM बनी परन्तु 2018 में कांग्रेस ने बसपा के विधायकों की सहायता से सरकार बनाई।
- द्विदलीय प्रणाली से राज्य में क्षेत्रीय दलों उभार ज्यादा देखने को नहीं मिलता, जिससे कई बार स्थानीय मुद्दे नजरअंदाज हो जाते है और प्रमुख पार्टियों पर काम करने का दबाव ज्यादा प्रभावी नहीं हो पाता।

4. भारत के विधि आयोग के 255 वें प्रतिवेदन में निर्वाचन सुधारों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संस्तुतियाँ क्या है।

उ. भारत के विधि आयोग के 255 वे प्रतिवेदन में में निर्वाचन सुधारों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संस्तुतियाँ निम्नलिखित हैं-

1. विधि आयोग ने चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार के चुनावी खर्च की सीमा निर्धारित करने की बात की है।
2. विधि आयोग ने सरकारी खर्च से चुनाव कराने की बात कही है।

3. जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम में सुधार करके राजनीतिक दलों में आन्तरिक लोकतंत्र लाने की बात कही।
4. आनुपातिक प्रतिनिधित्व अपनाने के लिए एक बार फिर से पुनर्विचार की सिफारिश की है।
5. दल बदल कानून के द्वारा अयोग्यता निर्धारण करने की शक्ति राज्यपाल व राष्ट्रपति को हस्तांतरित करने की सिफारिश है
6. चुनाव आयोग को मजबूती प्रदान करने के लिए अलग से सचिवालय बनाने की सिफारिश की है।
7. जन प्रतिनिधित्व अधिनियम में संशोधन करके पैड न्युज व राजनीतिक विज्ञापन को नियमित करने की सिफारिश की है।
8. विधि आयोग ने अनिवार्य मतदान को अलौकतांत्रिक बताया है।

मुख्य परीक्षा 2018

1. संविधान की उद्देशिका में वर्णित न्याय के विविध निहितार्थों को स्पष्ट करते हुए, यह विवेचन कीजिए कि उन्हें मूल अधिकारों एवं राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों द्वारा किस प्रकार सुनिश्चित किया गया है।

उ. भारतीय संविधान की उद्देशिका तीन न्यायों के बारे में उल्लेखित किया गया है –
(i) सामाजिक न्याय
(ii) राजनीतिक न्याय
(iii) आर्थिक न्याय

- इन तीनों न्यायों को प्राप्त करने में मूल अधिकारों व राज्य नीति निदेशक तत्त्वों की भूमिका निम्नलिखित है।

1. सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए
मूल अधिकार–
I. समता का अधिकार-
   a. कानून के समक्ष समता
   b. धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध, छुआछूत का अंत, उपाधियों का अंत।
II. शोषण के विरुद्ध अधिकार-
   a. मानव दुर्व्यवार बधुआ मजदूरी पर रोक-
   राज्य नीति निदेशक तत्व- अनुच्छेद 38 राज्य लोक-कल्याण में अभिवृद्धि में लिए सामाजिक व्यवस्था बनाऐगा।
   अन्य अनुच्छेद- 39, 41, 42, 43, 43-ए, 47 आदि।

2. आर्थिक न्याय-
मूल अधिकार
I. रोजगार में अवसर की समानता।
II. कोई भी पेशा चुनने व व्यापार करने का अधिकार
राज्य नीति निदेशक तत्व
अनुच्छेद- (39) गरीबों को नि:शुल्क कानूनी सहायता।
अनुच्छेद- (43) राज्य ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना।

3. राजनीतिक न्याय-
मूल अधिकार में
अनुच्छेद- 230/232 के तहत् विधानमण्डलों एवं संसद में अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए सीटें आरक्षित की गई है तथा एंग्लो इंडियन के सदस्यों का मनोनयन करना राजनीतिक न्याय है। इसके साथ 73वें संविधान संशोधन के तहत् स्थानीय निकायों में विभिन्न वर्गों यथा महिला, अन्य पिछड़ा वर्ग, एससी/एसटी को आरक्षण देना राजनीतिक न्याय को दर्शाता है।
राज्य नीति निदेशक तत्व में- अनुच्छेद 43-ए उद्योगों के प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
अनुच्छेद 40, 43-बी, 44 आदि।

2. भारत की सांविधानिक व्यवस्था में, संसद एवं उच्चतम न्यायालय के मध्य सर्वोच्चता के संघर्ष के संरचनात्मक एवं परिचालनात्मक पहलुओं का विवेचन कीजिए।

उ. भारतीय संसदीय व्यवस्था में स्पष्ट रूप से संवैधानिक सर्वोच्चता को अपनाया गया है ऐसा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मिनर्वा मिल्स वाद में स्पष्ट किया गया है।

- भारत न्यायपालिका व संसद संविधान से परे काम नहीं करेंगे संसद द्वारा जो भी कानून बनाये जायेंगे उसकी संवैधानिक व्याख्या करने का अधिकार न्यायपालिका के पास है।
- यदि संसद द्वारा निर्मित कानून विधि सम्मत नहीं है तो उसे न्यायपालिका रद्द कर सकती है वही संविधान में किसी भी प्रकार का संशोधन करने का अधिकार संसद के पास है। सर्वोच्च न्यायालय का मानना है की संविधान में किया गया कोई भी संसोधन संविधान के मूल ढाँचे का उल्लघंन नहीं करना चाहिए। संविधान के मूल ढाँचे के निर्धारण का अधिकार सर्वोच्च न्यायालय ने अपने पास रखा है। उदाहरण- संसद द्वारा राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग का गठन किया गया जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहते हुए रद्द कर दिया की यह न्यायपालिका की स्वतंन्त्रता का उल्लघंन करता है।
- कुछ समय पहले ही सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जाति अत्याचार अधिनियम के तहत् पूर्व गिरफ्तारी पर रोक लगा दी थी, जिसे संसद द्वारा कानून बनाकर पुन: बहाल कर दिया। ऐसे में भारत में देखने को मिलता है कि न्यायपालिका की त्रुटि को विधायिका सुधार लेती है, वही विधायिका त्रुटि करे तो न्यायपालिका सुधार लेती है। अत: भारतीय संसदीय परम्परा में संवैधानिक सर्वोच्चता के साथ विधायी व न्यायिक समन्वय देखने को मिलता है।

3. राजस्थान में किसी प्रभावशाली राज्यीय राजनीतिक दल के अभाव की परिघटना का विश्लेषण कीजिए।

उ. राजस्थान की राजनीति में मुख्य रूप से दो दलों की सरकार रही है- भा.ज.पा. एवं कांग्रेस पार्टी।

- 1998 के चुनावों में प्याज की कीमतों में वृद्धि के मुद्दे पर भाजपा चुनाव हार गई तथा कांग्रेस के अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बन गए परन्तु 1999 में राजस्थान में लोकसभा के चुनाव हार गए।
  2002 में भैरोसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति बने इसलिए उन्होंने राजस्थान राजनीति तथा भाजपा को छोड़ दिया तथा अपना उत्तराधिकारी वसुंधरा राजे सिंधिया को नियुक्त किया।
- राजे ने 2003 में भाजपा के जीत दिलाई तथा 2003-08 तक राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी। 2004 में भाजपा लोकसभा चुनाव से जीता था। 2008 में गुर्जर आरक्षण आन्दोलन की वजह से भाजपा हार गई। कांग्रेस ने सरकार बनाई।
- 2013 में मोदी लहर की वजह से पुन: भाजपा जीत गई राजे दुसरी बार मुख्यमंत्री बनी परन्तु 2018 में कांग्रेस ने बसपा विधायकों की सहायता से सरकार बनाई तथा अशोक गहलोत ने राजस्थान में तीसरी बार सरकार बनाई।
- भारतीय राजनीतिक विचारक रजनी कोठारी के अनुसार एक दलीय राजनीतिक व्यवस्था अब राजस्थान में नहीं है। वर्तमान में राजनीतिक स्वरूप द्विदलीय प्रणाली में बदल गया है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

4. भारत-यूरोपीय-संघ संबंधों पर ब्रेक्जिट के प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उ. ब्रेक्जिट- यह मुख्यत: दो शब्दो Britain और Exit से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है ब्रिटेन का यूरोपीयन संघ से बाहर निकलना।

भारत-यूरोपीय-संघ संबंधों पर बेक्जिट के प्रभाव निम्नलिखित है-

1. भारत द्वारा यूरोपीय संघ निर्यात में वृद्धि होगी क्योंकि यूरोपीय संघ द्वारा भारत को GPS (जनरल प्रीफरेंस सिस्टम) का दर्जा दिया गया है GPS का भारत सबसे बड़ा लाभार्थी है।
2. भारतीय उत्पाद की गुणवत्ता कम होने के कारण WTO के फाइटोसेनेटरी मानकों पर खरे नहीं उतरते है। यह भारत और यूरोपीय संघ के व्यापार में सबसे बड़ी चुनौती है।
3. व्यापक व्यापार ओर निवेश समझौता 2007 में लागू होना था जो कि अभी तक लागू नहीं हो पाया है। ऐसे में भारत को यूरोपीय संघ व ब्रिटेन से व्यापार के लिए अलग-अलग समझौता करना पड़ता है। भारत सरकार को यूरोपीय संघ के साथ विशेषकर तकनीकी क्षेत्र में निवेश समझौता करना चाहिए, क्योंकि EU के देश तकनीकी निवेश के मामले में अग्रणी हैं।

मुख्य परीक्षा 2021

1. भारत के न्यायिक पुनर्विलोकन की विशेषताओं एवं उदविकास का वर्णन कीजिए।

उ. भारत में न्यायिक पुनर्विलोकन अवधारणा का जन्म 1975 के इंदिरा गाँधी बनाम राजनारायण मामले से हुआ। (मूलत: यह सिद्धांत अमेरिका में विकसित हुआ) जिसमें न्यायिक पुनर्विलोकन को संविधान की बुनियादी विशेषता माना गया है।

- न्यायिक पुनर्विलोकन की विशेषताएँ –
  1. न्यायिक समीक्षा की शक्ति का प्रयोग सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट दोनों के द्वारा किया जा सकता है। हाइकोर्ट को यह शक्ति अनुच्छेद-226 के तहत् तथा सुप्रीम कोर्ट को अनुच्छेद-32 के तहत् मिलती है।
  2. राज्य और केंद्रीय दोनों कानूनों की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है।
  3. न्यायिक समीक्षा स्वचालित रूप से लागू नहीं होती है अर्थात् सुप्रीम कोर्ट स्वयं न्यायिक समीक्षा के लिए आवेदन नहीं करेगा।
  4. न्यायिक समीक्षा अनुच्छेद-21 के तहत् 'कानून द्वारा शासित होती है।
  5. यह संविधान की सर्वोच्चता को सिद्ध करती है।
  6. यह संविधान की बुनियादी विशेषता में सम्मलित है।
  7. न्यायिक समीक्षा को भारतीय न्यायपालिका के व्याख्याकार और पर्यवेक्षक की भूमिका में देखा जाता है।
  8. न्यायिक समीक्षा सरकारी कार्यवाही को वैध बनाता है तथा सरकार द्वारा किए गए अनुचित कृत्य के खिलाफ संविधान का संरक्षण करना।

2. योजना आयोग और नीति आयोग की कार्यप्रणाली में अंतर तथा भारतीय संघवाद पर उसके प्रभाव का वर्णन करे।

उ. नीति आयोग को 1 जनवरी, 2015 को योजना आयोग के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया। दोनों आयोग इस अर्थ में समान है कि दोनों की स्थापना भारतीय राजव्यवस्था में कार्यकारी निकाय के रूप में की गई। लेकिन इसके बाद भी योजना आयोग और नीति आयोग की कार्यप्रणाली में अंतर निम्नलिखित हैं-

योजना आयोग	नीति आयोग
योजना आयोग द्वारा अनुमोदित परियोजनाओं के लिए नीतियां लागू करने की शक्ति थी।	नीति आयोग मूल रूप से एक सलाहकारी निकाय।
योजना आयोग के पास धन आवंटित करने की शक्ति थी।	नीति आयोग को निधियों के आवंटन का अधिकार नहीं दिया गया।
योजना आयोग में राज्य के पास केवल बैठकों में भाग लेने के अलावा कोई भूमिका नहीं थी।	नीति आयेग में राज्य सरकारों की सक्रिय भागदीरी है।
योजना आयोग के पास अंशकालिक सदस्यों की नियुक्ति का कोई प्रावधान नहीं था।	नीति आयोग के पास अंशकालिक सदस्यों की नियुक्ति का प्रावधान है।

➢ **नीति आयोग व योजना आयोग का भारतीय संघवाद का प्रभाव–**

- योजना आयोग के अस्तित्व के दौरान भारत में विकास से संबंधित नीतियों का निर्माण केंद्र द्वारा किया जाता था तथा उनका क्रियान्वयन राज्यों के सहयोग से किया जाता था।
- केंद्र द्वारा निर्मित नीतियों से सभी राज्यों की समस्याओं का समाधान नहीं होता था इसलिए इन समस्याओं के समाधान के लिए नीति आयोग का गठन किया गया तथा इस संस्था में सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों की भागीदारी सुनिश्चित की गई।
- इस व्यवस्था को सहकारी संघवाद नाम दिया गया। इस सिद्धांत का मौलिक दर्शन सशक्त राज्यों के निर्माण के साथ सशक्त राष्ट्र के निर्माण की ओर अग्रसर हो रहा है।

3. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में 'क्वाड' की रणनीतिक भूमिका का विवेचन कीजिए-

उ. QUAD (चतुर्भुज सुरक्षा संवाद) भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के मध्य एक अनौपचारिक रणनीतिक वार्ता मंच है।

- **हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में क्वाड की रणनीतिक भूमिका-**
  1. पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापार व समुद्री सुरक्षा में भागीदारी बढ़ाना।
  2. हिन्द महासागर में शांति, स्थिरता तथा मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना।
  3. क्वाड देशों का पूर्वी एशियाई देशों में अपना प्रभुत्व बढ़ाना।
  4. चीन की बैल्ट एवं रोड़ पहल को इण्डो-पैसिफिक क्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा पेश करना।
  5. चीन की मोतियों की माला नीति को नियंत्रित करना।
  6. हिन्द प्रशांत क्षेत्र को स्वतंत्र, समृद्ध और मुक्त बनाना।
  7. हिन्द प्रशांत क्षेत्र में नियम आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए प्रतिबद्धता जाहिर करना है ताकि नेविगेशन एवं ओवर प्लाइट की स्वतंत्रता कनेक्टिविटी का प्रसार एवं समुद्री सुरक्षा के सहयोग से मुख्य तत्व के रूप में पहचान मिल सके।
- इसी को ध्यान में रखते हुए भारत और ऑस्ट्रेलिया ने रणनीतिक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में व्यापक व समावेशी विकास के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प भी लिया है। सभी देश भारत के साथ मिलकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता व आर्थिक समृद्धि के लिए काम करने को इच्छुक है।

4. राजस्थान में ग्राम सभा की प्रभावी कार्यप्रणाली के लिए सुझाव दीजिए।

उ. ग्रामसभा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243 (B) में उल्लेखित है। ग्रामसभा पंचायतीराज की सबसे छोटी इकाई है। पंचायत के सभी मतदाता ग्राम सभा के सदस्य होते हैं। ग्राम सभा सरपंच व पंचायत को जवाबदेह बनाती है। इसे प्रभावी बनाने हेतु निम्न सुझाव हैं-

1. सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए योजनाओं, कार्यक्रमों और परियोजनाओं का अनुमोदन एवं क्रियान्वयन बेहतर तरीके से किया जाना चाहिए।
2. गरीबी उन्मूलन व अन्य कार्यक्रमों के अधीन वास्तविक लाभार्थियों की पहचान एवं उन्हें लाभान्वित करवाना चाहिए।
3. विभिन्न कार्यों को कुशलतापूर्वक करने के लिए विभिन्न समितियां बनाई जानी चाहिए।
4. प्रत्येक ग्राम सभा में सामाजिक अंकेक्षण किया जाना चाहिए।
5. ग्राम कोष में जमा धन का उपयोग राज्य सरकार के निर्देश में किया जाना चाहिए।
6. सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
7. ग्राम पंचायत समन्वय समिति ग्राम की आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं के आधार पर योजनाओं का प्रारूप तैयार करें।
8. तकनीकी सहयोग दल ग्राम पंचायत में विकेन्द्रीकृत नियोजन हेतु समस्त हितधारकों का क्षमतावर्द्धन, मार्गदर्शन व विकेन्द्रीकृत योजना निर्माण में ग्राम पंचायत समन्वय समिति को सहयोग प्रदान करेगा।

मुख्य परीक्षा 2023

1. Describe the Electoral process of members of Rajya Sabha.
राज्यसभा के सदस्यों की निर्वाचन प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर- –राज्यसभा संसद का अन्य सदन है अनुच्छेद-80 के तहत् राज्यसभा में अधिकतम 250 सदस्य (निर्वाचित एवं मनोनीत) हो सकते है।

- अनुच्छेद-80(3) के तहत राष्ट्रपति विशेष ज्ञान अथवा व्यावहारिक अनुभव रखने वाले 12 व्यक्तियों को (साहित्य, विज्ञान, कला एवं समाज सेवा) राज्यसभा में मनोनीत करते है।
- **राज्यसभा में सदस्यों का निर्वाचन –**
  1. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950
  2. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951

  निर्वाचन मण्डल –
- राज्यसभा में किसी राज्य के प्रतिनिधि का निर्वाचन उस राज्य की विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाएगा।
- राज्यसभा में केन्द्रशासित प्रदेशो का निर्वाचन उस प्रक्रिया से और उस निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाएगा, जिसे संसद विधि बनाकर तय करें।
- राज्यसभा के सदस्यों का निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व की एकल संक्रमणीय मत प्रणाली से होता है।
- 2003 में संसद ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 में राज्यसभा की निर्वाचन पद्धति में संशोधन के तहत् खुली मतदान प्रणाली को अपनाया।
- 2003 से कोई भी व्यक्ति राज्यसभा में किसी भी राज्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है।
- कार्यकाल 6 वर्ष
- प्रति 2 वर्ष से लगभग 1/3 सदस्य पदमुक्त हो जाते है।
- राज्यसभा के सदस्य कार्यकाल समाप्त होने के बाद राज्यसभा के पुन: सदस्य बन सकते है।
- राज्यसभा के चुनाव में राजनीतिक दलों और स्वतंत्र उम्मीदवारों दोनों का भाग होता है, लेकिन चुनाव, प्रत्याशी के द्वारा नामांकित संख्या के आधार पर किए जाते हैं।

2. Discuss the process of 'Secularisation of Caste' and its impact.
'जाति के सेकुलरीकरण' की प्रक्रिया और उसके प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तर- 'जाति के सेकुलरीकरण' का अर्थ है जाति व्यवस्था पर धर्म और अन्य सामाजिक मानदंडों के प्रभाव में कमी आना, और इसके बावजूद तर्क, समानता और आधुनिक मूल्यों का बढ़ना। इस प्रक्रिया के प्रभाव में जाति व्यवस्था में बदलाव, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि, और जातिगत भेदभाव में कमी आना शामिल है।

जाति के सेकुलरीकरण की प्रक्रिया-
- शिक्षा और शहरीकरण
- कानून और संविधान
- राजनीतिक बदलाव
- आर्थिक विकास
- सामाजिक सुधार

जाति के सेकुलरीकरण के प्रभाव-
- जाति व्यवस्था में बदलाव
- सामाजिक समानता
- राजनीतिक बदलाव
- आर्थिक विकास
- सामाजिक न्याय/सामाजिक समानता की दिशा में प्रगति जाति के सेकुलरीकरण की प्रक्रिया एक जटिल और धीमी प्रक्रिया है, लेकिन यह जाति व्यवस्था को कमजोर करने और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा, कानून, राजनीतिक बदलाव, आर्थिक विकास और सामाजिक सुधार जाति के सेकुलरीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. Identify the distinguishing features of the first phase of electoral politics (1952-1971) in Rajasthan.
राजस्थान में चुनावी राजनीति के प्रथम चरण (1952-1971) की मुख्य विशेषताओं को चिह्नित कीजिए।

उत्तर- राजस्थान में चुनावी राजनीति के प्रथम चरण (1952-1971) - राजस्थान की राजनीतिक प्रणाली की परिघटना का प्रथम चरण (1952-1971): कांग्रेस प्रणाली (एक दलीय प्रभुत्व) इस प्रकार समझा जा सकता हैं-

(1) इस अवधि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राज्य में प्रमुख राजनीतिक दल के रूप में उभरी।

(2) 1952 के प्रथम विधानसभा चुनाव में राज्य में कांग्रेस के अलावा अन्य दलों ने भी भाग लिया। इसमें भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी, भारतीय जनसंघ तथा राम राज्य परिषद् प्रमुख थे। लेकिन राजस्थान की राजनीति में ऐसा कोई क्षेत्रीय मुद्दा उभरकर नहीं आया जिससे यहां भी कोई राज्यीय क्षेत्रीय दल का उदय हो पाता।

(3) 1952 में राजस्थान में पहली विधानसभा के लिए 160 सीटों के लिए चुनाव हुए। 160 सीटों में से कांग्रेस को 82, रामराज्य परिषद् को 24, भारतीय जनसंघ को 8, कृषिकार लोक पार्टी को 7 तथा निर्दलीय प्रत्याशियों को 35 स्थानों पर विजय मिली। जागीरदारों का राम राज्य परिषद् राजस्थान का प्रथम विपक्षी दल था।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

(4) दूसरी विधानसभा (1957-1962) के चुनाव 176 सीटों पर चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस को 119, भारतीय जनसंघ को 6, रामराज्य परिषद् को 17, प्रजा समाजवादी दल एवं साम्यवादी दल को 1-1 तथा निर्दलियों को 32 स्थान प्राप्त हुए।

(5) तीसरी विधानसभा (1962-1967) का निर्वाचन 176 सीटों पर हुआ, जिसमें कांग्रेस को 87, भारतीय जनसंघ को 15 साम्यवादी दल को 5, निर्दलियों को 22 तथा शेष सीटें अन्य दलों को प्राप्त हुई।

(6) चतुर्थ विधानसभा (1967-1972) का निर्वाचन 184 सीटों पर हुआ। इसमें किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। इन चुनावों में कांग्रेस को 89, भारतीय जनसंघ को 22, स्वतंत्र पार्टी को 49, संयुक्त समाजवादी दल को 8 और निर्दलियों को 15 स्थान प्राप्त हुए।

(7) वर्ष 1962 तक कांग्रेस का शासन अछूता था, लेकिन 1967 में शेखावत के नेतृत्व वाली जनसंघ और जयपुर की राजमाता गायत्री देवी की अध्यक्षता वाली स्वतंत्र पार्टी बहुमत तक पहुंची, लेकिन सरकार नहीं बना सकीं। 1971 के युद्ध में जीत के बाद 1972 में कांग्रेस ने भारी जीत हासिल की। पंडित जवाहरलाल नेहरु और उसके बाद इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने राज्य में स्थिरता बनाए रखी।

4. There is a viewpoint that the foreign policy of India is in a dilemma, i.e., between joining the 'developed North' or leading the 'developing South'. Analyse this viewpoint with plausible arguments.

एक दृष्टिकोण है कि भारतीय विदेश नीति दुविधा में है, यथा भारत 'विकसित उत्तर' से जुड़े अथवा 'दक्षिण के विकासशील' देशों का नेतृत्व करे। उपर्युक्त कथन का विश्लेषण समुचित तर्कों के साथ कीजिए।

उत्तर- भारत की विदेश नीति-भारत की विदेश नीति में दुविधा का मुख्य कारण है, भारत का एक तरफ "विकसित उत्तर" (Developed North) से जुड़ने और दूसरी तरफ "दक्षिण के विकासशील" देशों का नेतृत्व करने का दबाव। यह दुविधा भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और रणनीतिक लक्ष्यों से संबंधित है।

भारत की भूराजनीतिक स्थिति और प्राथमिकताएं

- भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति है जो पारंपरिक रूप से गुटनिरपेक्ष नीति का पालन करता आया है। लेकिन 21वीं सदी के वैश्विक संदर्भ में भारत के समक्ष यह चुनौती है कि वह: आर्थिक, तकनीकी और सामरिक दृष्टि से समृद्ध 'विकसित उत्तर' (जैसे अमेरिका, यूरोप, G7 आदि) से संबंध मजबूत रखे,
- वहीं अपने ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक अनुभव साझा करने वाले 'वैश्विक दक्षिण' (Global South) का प्रतिनिधित्व भी करे।
- इस द्वंद्व के चलते भारत की विदेश नीति कई बार संतुलनकारी दृष्टिकोण में दिखाई देती है।

'विकसित उत्तर' से जुड़ने के लाभ और सीमाएँ

लाभ:

- आर्थिक निवेश, व्यापार और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण।
- सामरिक सहयोग (जैसे QUAD, भारत-अमेरिका रक्षा समझौते)। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एकीकृत होने के अवसर।

सीमाएं:

- विकसित देशों की नीतियाँ कई बार विकासशील देशों के हितों के अनुकूल नहीं होतीं (जैसे WTO में कृषि सब्सिडी का विरोध)। भारत की स्वतंत्र विदेश नीति की स्वायत्तता पर दबाव।

'वैश्विक दक्षिण' का नेतृत्व करने की संभावनाएं और चुनौतियाँ

संभावनाएं:

- भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (गुटनिरपेक्ष आंदोलन में नेतृत्व)। विकासशील देशों की समस्याओं (जैसे गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा) को समझने की क्षमता।

चुनौतियाँ:

- विकासशील देशों के आपसी मतभेद (भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक)। सीमित संसाधन और भारत की खुद की विकास संबंधी चुनौतियाँ।

वर्तमान विदेश नीति में संतुलन की कोशिशें

- भारत की विदेश नीति अब (multi-alignment) की ओर बढ़ रही है—जहाँ वह किसी एक खेमे से पूरी तरह नहीं जुड़ता, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार रणनीतिक साझेदारियाँ बनाता है। उदाहरण: रूस और अमेरिका दोनों से सामरिक सहयोग।
- ब्रिक्स (BRICS) और QUAD दोनों में सक्रियता।
- "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" जैसे विचारों से वैश्विक दक्षिण के साथ नैतिक नेतृत्व।
- भारतीय विदेश नीति की यह दुविधा केवल उलझन नहीं, बल्कि रणनीतिक विवेकशीलता का प्रतीक भी है। भारत न तो पूरी तरह 'विकसित उत्तर' में विलीन होना चाहता है, न ही केवल 'वैश्विक दक्षिण' तक सीमित रहना चाहता है। वह दोनों ध्रुवों के बीच संतुलन बनाते हुए अपनी स्वायत्तता, रणनीतिक हितों और वैश्विक नेतृत्व की भूमिका को आकार देने का प्रयास कर रहा है।

मुख्य परीक्षा 2024

1. भारत में सेक्युलरवाद के सांविधानिक निहितार्थों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

– भारत में सेक्युलरवाद का सांविधिक तंत्र यह है कि राज्य किसी भी धर्म को विशेष मान्यता नहीं देता और सभी धर्मों के प्रति समान दूरी बनाए रखता है। संविधान ने इसे नागरिकों की स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय की गारंटी से जोड़ा है।

– भारत के संविधान की प्रस्तावना में 42वें संशोधन (1976) द्वारा 'सेक्युलर' शब्द जोड़ा गया, जिससे स्पष्ट हुआ कि भारत एक गणतंत्र है। इसका अर्थ है कि राज्य न तो किसी धर्म को संरक्षण देगा और न ही किसी धर्म का विरोध करेगा।

– **अनुच्छेद 14, 15, 16:** समानता का अधिकार और धर्म के आधार पर भेदभाव का निषेध।

– **अनुच्छेद 25–28:** अंत:करण की स्वतंत्रता, धर्म को अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता, धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता, किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय (भुगतान) से स्वतंत्रता, कुछ शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने से स्वतंत्रता।

– **अनुच्छेद 44:** समान नागरिक संहिता का प्रावधान, जो नागरिकता को और मजबूत करता है।

– **न्यायिक व्याख्या:** केशवानंद भारती केस (1973) में प्रस्तुत **मूल संरचना** की अवधारणा के अनुसार सेक्युलरवाद को संविधान की मूल संरचना का हिस्सा माना। **एस.आर. बोम्मई केस** (1994) ने इसे राज्य की नीतियों का अनिवार्य तत्व घोषित किया।

– भारत में धर्मनिरपेक्षता का सांविधिक सिद्धांत यह है कि राज्य सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार करता है अर्थात राज्य का कोई धर्म नहीं है, सभी धर्म राज्य के हैं। यह भारतीय लोकतंत्र की मूल आत्मा है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

2. अनुच्छेद 200 तथा अनुच्छेद 201 पर उच्चतम न्यायालय द्वारा तमिलनाडु राज्य बनाम् तमिलनाडु-राज्यपाल वाद में दिए गए हाल ही के फैसले के विशेष संदर्भ में भारतीय संघवाद की प्रभाविता में राज्यपाल की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-

- तमिलनाडु बनाम तमिलनाडु-राज्यपाल (2023) मामले में सुप्रीम कोर्ट का हालिया निर्णय भारतीय संघवाद की प्रभावशीलता को स्पष्ट करता है।
- न्यायालय ने अनुच्छेद 200 और 201 की व्याख्या करते हुए कहा कि राज्यपालों के पास न तो 'पूर्ण वीटो' है और न ही 'पॉकेट वीटो' की शक्ति।
- वे विधेयकों को अनिश्चित काल तक लंबित नहीं रख सकते और उन्हें मंत्रिपरिषद की सलाह पर कार्य करना अनिवार्य है।
- न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि कोई विधेयक पुनः विधानसभा द्वारा पारित किया जाता है और उसमें मूलभूत परिवर्तन नहीं है, तो राज्यपाल को उस पर सहमति देनी होगी।
- साथ ही, अनुच्छेद 200 के तहत विधेयकों पर शीघ्र निर्णय लेने की आवश्यकता पर बल दिया गया और समय-सीमा निर्धारित की गई, ताकि विधायी प्रक्रिया बाधित न हो।
- अनुच्छेद 201 के अंतर्गत राष्ट्रपति को आरक्षित विधेयकों पर भी समयबद्ध निर्णय देना होगा।
- इस फैसले का प्रभाव यह है कि राज्यपाल की भूमिका केवल संवैधानिक प्रमुख की है, न कि स्वतंत्र राजनीतिक शक्ति की। इससे राज्यों की विधायी स्वायत्तता सुरक्षित होती है और सहकारी संघवाद को मजबूती मिलती है।
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सुधार होता है क्योंकि विधेयक अनिश्चित काल तक अटके नहीं रहते।
- **निष्कर्षतः**, यह निर्णय भारतीय संघवाद को अधिक प्रभावी बनाता है और राज्यपाल की शक्तियों को संवैधानिक दायरे में सीमित कर लोकतांत्रिक जवाबदेही को मजबूत करता है।

3. "राजस्थान पंचायत राज (उपबंधों का अनुसूचित क्षेत्रों में उनके लागू होने के संबंध में उपान्तरण) अधिनियम, 1999" के प्रभावी क्रियान्वयन में क्या चुनौतियाँ हैं?

उत्तर-

- राजस्थान पंचायत राज (अनुसूचित क्षेत्रों में उपान्तरण) अधिनियम, 1999 का उद्देश्य अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों पर उपान्तरण) अधिनियम, 1996 (PESA) के प्रावधानों को लागू करना था, ताकि ग्राम सभाओं को वास्तविक स्वशासन और लाभार्थियों पर अधिकार मिल सके।
- बावजूद इसके प्रभावी अभियानों में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं।
- **ग्राम सभा की कमजोर स्थिति:** अधिनियम ग्राम सभा को भूमि, जल, वन और लाभार्थियों पर अधिकार देता है, लेकिन व्यवहार में प्रशासनिक अधिकारी और राज्य सरकार की नीतियाँ इन अधिकारों को सीमित करती हैं।
- **राजनीतिक व प्रशासनिक हस्तक्षेप:** पंचायत व्यवस्था पर स्थानीय नेताओं और नौकरशाही का दबाव रहता है, जिससे ग्राम सभा के निर्णय अक्सर निष्प्रभावी हो जाते हैं।
- **ग्राम सभा पर नियंत्रण का अभाव:** खनिज, वन उत्पाद और जल लाभार्थियों पर ग्राम सभा की सहमति को बढ़ाकर निजी कंपनियों और राज्य उद्देश्यों का वर्चस्व बना रहता है।
- **जागरूकता और क्षमता निर्माण की कमी:** जनजातीय समुदायों और पंचायत व्यवस्था को अधिनियम के अधिकारों की पर्याप्त जानकारी नहीं है। प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम सीमित हैं।
- **पशुधन समन्वय की समस्या:** पारंपरिक जनजातीय समुदायों और पंचायत राज समुदायों के बीच तालमेल का अभाव है।
- **कानूनी अवरोध:** अधिसूचनाओं और नियमों में सख्ती की कमी से ग्राम सभा के अधिकारों का प्रयोग कठिन हो जाता है।
- जनजातीय समुदायों को वास्तविक स्वशासन और निकायों पर नियंत्रण–पूरी तरह साकार नहीं हो पाया है। इसके समाधान के लिए ग्राम सभाओं को सशक्त करना, प्रशासनिक विस्थापन बढ़ाना और जनजागरूकता कार्यक्रम चलाना आवश्यक है।

4. "जहाँ एक ओर, विदेश मंत्रालय अपने मंत्री के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति के निर्माण का संस्थागत सूत्रधार है, वहीं विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने इस प्रक्रिया में प्रभुत्वशाली भूमिका निभाई है।" इस कथन के प्रकाश में उन दृष्टांतों की चर्चा कीजिए, जहाँ प्रधानमंत्रियों ने व्यक्तिगत रूप से भारत की विदेश नीति को आकार दिया है।

उत्तर-

- भारत की विदेश नीति के निर्माण में विदेश मंत्रालय ने अपने मंत्री के नेतृत्व में प्रमुख भूमिका निभाई है, लेकिन विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने व्यक्तिगत रूप से इसे दिशा दी है।
- **जवाहरलाल नेहरूः** स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री ने विदेश नीति को गुटनिरपेक्ष आंदोलन और पंचशील सिद्धांतों के माध्यम से आकार दिया। उन्होंने शांति, उपनिवेशवाद विरोध और विकासशील देशों के सहयोग को प्राथमिकता दी।
- **इंदिरा गांधी:** 1971 के बांग्लादेश युद्ध में निर्णायक नेतृत्व किया और सोवियत संघ के साथ मैत्री संधि कर भारत की सुरक्षा सुनिश्चित की। उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन को अधिक सक्रिय और भारत-संगठन बनाया।
- **राजीव गांधी:** तकनीकी सहयोग और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में भारत की भूमिका को बढ़ाया। श्रीलंका में IPKF भेजने का निर्णय उनकी व्यक्तिगत विदेश नीति दृष्टि का उदाहरण है।
- **अटल बिहारी वाजपेयी:** पोखरण-II परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका और अन्य देशों से संवाद स्थापित कर भारत की जीडीपी स्वायत्तता को मजबूत किया। उन्होंने पाकिस्तान के साथ लाहौर बस यात्रा और शांति की पहल की।
- **मनमोहन सिंह:** भारत-अमेरिका परमाणु समझौता (2008) उनकी व्यक्तिगत पहल थी, जिसने भारत की वैश्विक ऊर्जा और जीडीपी स्थिति को बदल दिया।
- उदाहरणों से स्पष्ट है कि भारतीय प्रधानमंत्रियों ने विदेश मंत्रालय की विभागीय भूमिका से परे जाकर व्यक्तिगत नेतृत्व और दृष्टि के आधार पर विदेश नीति को निष्पक्ष रूप से आकार दिया है।

❑❑❑